International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 269-270

शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं विभिन्न मूल्य निर्माण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शैलजा राय
शोध छात्रा, नेहरू ग्रम भारती विश्वविद्यालय कोटवा, जमुनीपुर, दुबावल, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

स्वतंत्राता के बाद नीति निर्माताओं ने अंग्रेजों द्वारा निर्मित कुलीनतावादी शिक्षा प्रणाली को जन सामान्य की उस शिक्षा प्रणाली में बदलने केलिए कठिन परिश्रम किया, जो समानता एवं सामाजिक न्याय पर खड़ी थी। वर्ष 2009 में शिक्षा के अधिकार का विचार देते हुए इसे मौलिक अधिकार बना दिया गया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा भी की गई। उस के बाद से नीति निर्माताओं ने सर्व शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। आज भारत को तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था के रूप में ही नहीं बल्कि उपयुक्त एवं शिक्षित व्यक्तियों वाले शक्तिशाली मानव संसाधन के विशाल समूह के रूप में भी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। उच्च शिक्षित, तकनीक को समझने वाले और वैज्ञानिक तरीवेफ से प्रशिक्षित भारतीय नागरिक दुनिया के कोने–कोने में विभिन्न प्रकार के काम कर रहे हैं और भारत का मान बढ़ा रहे हैं। साक्षरता के स्तर में पिछले कुछ वर्षों में स्मरणीय उपलब्धियों में शामिल रही है। स्वतंत्राता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता दर केवल 12 पफीसदी थी। 2011 की जनगणना वेफ अनुसार आज हमारी साक्षरता दर 74.4 पफीसदी है। 93.1 फीसदी के साथ केरल और 91.58 पफीसदी के साथ मिजोरम सबसे आगे हैं और दूसरे राज्यों को भी ऊंचाई तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षा प्राचीन काल से निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालय में शिक्षा संचालन के लिए शिक्षण और पाठ्य सहगामी क्रियाओं को उपकरण के रूप में प्रयुक्त करके शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में उपयोग किया जाता है। इसी संदर्भ में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत आने वाली गतिविधियों की पहचान एवं मूल्यों के महत्व को दर्शाया गया है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं बालक के मानसिक एवं शारीरिक विकास को संतुलन प्रदान करती है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में बालक अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार प्रतिभाग करता है जिसके कारण बालक में आत्म विश्वास निर्णय लेने की क्षमता एवं नेतृत्व गुण जैसे व्यक्तित्व गुणों का विकास होता है। बालक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से स्वयं को शिक्षण के साथ ही चारित्रिक गुणों में निपुणता प्राप्त करता है। कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार शिक्षण के साथ ही छात्रों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से नेतृत्व कौशल एवं व्यक्तित्व के गुणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

पाठ्य सहगामर क्रियाओं के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों को संरक्षित एवं संबर्धित किया जाता है।

प्रार्थना सभा के माध्यम से सभी लोगों में ऊँच–नीच की भावना का समापन, सर्व धर्म समभाव की भावना, अनुशासन, ध्यान की एकाग्रता, लयबद्ध गायन, उत्तम सोच का विकास होता है। विद्यालयों में समय–समय पर सांस्कृतिक मेलों का आयोजन विभिन्न धर्मों से सन्दर्भित करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में विविध धर्मों की मान्यताओं, आदर्शों? मूल्यों, पैगम्बरों के उपदेशों के बारे में जागरूकता एवं सत्य के प्रति आदर एवं निष्ठा का भाव जागृत किया जाना चाहिए।

खेलकूद के माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल एवं समूह में कार्य एवं सामंजस्य के विकास में खेलकूद महत्वपूर्ण उपकरण हैं। वर्तमान समय में खेलकूद किसी खेल विशेष हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने का माध्यम बन रहे हैं जिसे विद्यार्थी भावी जीवन में व्यवसाय हेतु खेल विशेष को अपनाता है। खेल–कूद में निश्चित नियमों के पालन की अनिवार्यता विद्यार्थियों में अनुशासन के आदत के विकास हेतु महत्वपूर्ण उपकरण है।

नेशनल कैडेट क्राप (एन0सी0सी0) के माध्यम से छात्रों में अनुशासन एवं आत्मरक्षा के योग्यताओं का विकास किया जाता है। एन0सी0सी0 के माध्यम से छात्रों को कठिन परिस्थितियों में संघर्ष एवं आत्मरक्षा हेतु तैयार किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन0एस0एस0) के माध्यम से छात्रों में सामुदायिक दायित्व के प्रति जिम्मेदारियों का अहसास कराया जाता है। समुदाय के लिए छात्रों के भावात्मक एवं नैतिक दायित्व बोध को एन0एस0एस0 के माध्यम से विकसित किया जाता है। छात्रों में समूह द्वारा सामुदायिक कर्तव्य निर्वाह के दृष्टिकोंण का विकास किया जाता है। बड़ें एवं कठिन कार्यो को समूह के माध्यम से सरलता पूर्वक करने के सामाजिक एकता के विचार के प्रति छात्रों में आदर भाव का विकास करने में राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष महत्व है।

मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से छात्रों में स्वतन्त्र विचारों के निर्माण एवं विभिन्न प्रकार के विचारों एवं उपदेशों के प्रति भिन्न–भिन्न व्यक्तियों, लेखकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों के मतों का तार्किक विश्लेषण एवं परख की योग्यता का विकास किया जाता है। छात्र में नवीन विचारों के प्रस्फुटन एवं नवीन प्रश्नों के समाधान में मुक्त पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। छात्रसंघ के माध्यम से छात्रों में लोकतंत्र एवं नेतृत्व कौशल की योग्यता को विकसित करने में सहायता मिलती है। छात्र संघ के माध्यम से छात्रों में राजनैतिक, लोकतांत्रिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पर्व के माध्यम से छात्रों में देशभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग, बलिदान एवं अच्छे नागरिक मूल्यों को विकसित किया जाता है। छात्रों में देश–प्रेम एवं लोकतांत्रिक समरसता के भाव को विकसित करने में राष्ट्रीय पर्व महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

रेडक्रास के माध्यम से किसी आपदाग्रस्त क्षेत्रों में छात्रों को स्वास्थ्य सुविधाओं एवं राहत सामग्री के वितरण हेतु सामुंदायिक दायित्व एवं कर्तव्य बोध को जागृत करने में सहायता मिलती है। छात्रों में

मानवीय मूल्यों (करूणा, प्रेम, दया, परोपकार आदि) के विकास में रेडक्रास सेवाओं का विशेष महत्व है।

स्काउटिंग एवं गाइडिंग के माध्यम से छात्रों में सांस्कृतिक विविधता एवं कठिन परिस्थितियों (जंगल, पर्वत, बाढ़ आदि) के प्रति संघर्ष एवं समायोजन की योग्यता के विकास को बढ़ावा मिलता है। छात्रों में रोमांच एवं वीरोचित गुणों (निडरता, साहस, आक्रामकता, धैर्य आदि) गुणों के विकास में स्काउटिंग एवं गाइडिंग) का विशेष महत्व है।

कार्य अनुभव के माध्यम से छात्रों में किसी शिल्प एवं वास्तुकला की योग्यताओं का विकास करने में सहायता मिलती है। छात्रों में तकनीकी एवं कौशल के विकास के साथ ही शारीरिक श्रम के प्रतत आदर एवं सम्मान की भावना का विकास करने में कार्य अनुभव सक्षम है।

महापुरूषों के जन्म दिवस मनाने से छात्रों में आदर्श एवं मानवीय उत्थान के कार्यों के प्रति आदर भाव का सूत्रपात होता है। मान–सम्मान प्राप्त करने हेतु छात्र के व्यक्तित्व पर महापुरूषों का विशेष प्रभाव पड़ता है। जिस पर विवेकानन्द जी का जन्म दिवस मनाने पर युवाओं के व्यक्तित्व पर स्वामी विवेकानन्द जी का प्रभाव महसूस किया जा सकता है। विविध प्रकार के मेले जैसे – पुस्तक मेला, शिल्प मेला, धार्मिक मेला, सामाजिक मेला आदि छात्रों के व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव डालते हैं। इन मेलों के माध्यम से छात्र के अन्दर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं कौशल से सम्बन्धित योग्यताओं का विकास किया जा सकता है।

सेमिनार एवं वर्कशाप के माध्यम से छात्रों में किसी निश्चित विषय वस्तु के सन्दर्भ में विषय विशेषज्ञों के माध्यम से विषय पर क्रियात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के विषयगत व्यवसायगत कौशलों का संवर्धन करना निश्चित ही छात्र हित हेतु प्रस्तावित क्रिया विधियों में एक महत्वपूर्ण क्रियाविधि है।

पेंटिंग प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों के भावात्मक विचारों का व्यवहारात्मक प्रदर्शन संभव हो पाता है। पेंटिंग के माध्यम से छात्रों में सृजनात्मक एवं नवाचारी विचारों की उत्पत्ति संभव है। वर्तमान समय में छात्र की व्यवसायिक जरूरतें भी पेंटिंग द्वारा पूरी हो रही हैं। यह छात्रों हेतु आकर्षक व्यवसाय का पर्याय बन रहा है।

कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट के माध्यम से छात्रों में तकनीकी कुशलता एवं सूचना तंत्र के विशाल ज्ञान कोश के प्रति आकर्षण एवं रूचि दिखाई देती है। वर्तमान समय में डिजीटल क्रांति और 4–जी डाटा की उपलब्धता से छात्र ज्ञान एवं सूचनाओं के भण्डार के द्वार पर खड़ा हो गया। अपनी आवश्यकता एवं योग्यता के द्वारा विश्व के किसी भी विषय वस्तु के बारे में अत्यन्त कम समय में सम्पूर्ण सूचना प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों में मानवीय, सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक, सांस्कृतिक, व्यवहारिक, व्यक्तित्व एवं चारित्रिक मूल्यों के निर्माण में अति उपयोगी साधन के रूप में प्रस्तुत होती है। किसी भी शैक्षिक व्यवस्था में पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों के सर्वागीण विकास में अपना योगदान देती हैं। छात्रों को जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनाने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विशेष महत्व है।

शिक्षा में तेजी ने तथा बेहतर करने की इच्छा ने एक चिंताजनक स्थिति भी उत्पन्न कर दी है, जहां विद्यार्थियों पर उपलब्धियों एवं प्रदर्शन का बड़ा दबाव हो गया है। बच्चे को मशीनी शिक्षा प्रणाली के उत्पाद रूप में देखे जाने के कारण व्यक्तिगत विकास एवं जीवनोपयोगी कौशल विकास के महत्व को अनदेखा किया गया है। जो व्यक्ति तैयार किए जा रहे हैं, वे स्वयं विचार करने अथवा जिम्मेदारी लेने एवं स्वतंत्रा रूप से निर्णय लेने में असमर्थ हैं। शिक्षा प्रणाली द्वारा स्वूफली पाठ्यक्रम में जीवनोपयोगी कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का समावेश करते हुए बच्चे को समाज की चुनौतियों के साथ प्रभावी तरीवेफ से निपटने योग्य बनाया जाना चाहिए। सीबीएसई ने 2012 में जीवनोपयोगी कौशल कार्यक्रम को सतत एवं समग्र मूल्यांकन वेफ अंश के रूप में शामिल किया था, जिसका लक्ष्य 10 से 18 वर्ष के बीच की आयु वाले किशोर विद्यार्थी थे। सर्व शिक्षा अभियान की कार्य सूची में भी गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रदान कराने के साथ ही उच्च प्राथमिक कक्षाओं की लड़कियों को जीवनोपयोगी कौशलों का प्रशिक्षण देना भी शामिल है। देश के नागरिक के रूप में बच्चे के सर्वागीण विकास के लिए मूल्य आधारित शिक्षा भी आवश्यक हो गई है, जिसे स्वूफल एवं कॉलेज वेफ स्तर पर मूल्य सिखाकर, उनका पोषण एवं विकास कर प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ

1. पाण्डेय, रामशकल और चतुर्वेदी, ममता, उदीयमान, भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2004)।
2. एन0आर0 स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0लाल बुक डिपो (2010)
3. लर्निंगः द ट्रेजर विदिन, यूनेस्को पब्लिशिंग, पेरिस, 1996
4. प्लेटो, रिपब्लिक, वड्र्सवर्थ क्लासिक्स ऑपफ वर्ल्डलिटरेचर, लंदन, 1987
5. एजुवेफशन शुड एम पफॉर सोशल कोहेशन, रिलिजियस अमिटी, जे. एस. राजपूत, न्यू इंडियन एक्सप्रेस, 1 नवंबर, 2015